डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल

विषय - हिंदी
कक्षा – सातवीं
ज्ञान सागर- पाठ 2
पाठ का नाम - 'नाटक में नाटक'
लेखक – मंगल सक्सेना

PRESENTED BY- Mrs.K.Geeta Rao

2

नाटक में नाटक

राकेश का मन तो कह रहा था कि बिना पूरी तैयारी के नाटक नहीं खेलना चाहिए और जब नाटक में अभिनय करने वाले कलाकार भी नए हों, मंच पर आकर डर जाते हों, घबरा जाते हों और कुछ-कुछ बुद्धू भी हों तब तो अधूरी तैयारी से खेलना ही नहीं चाहिए। उसके साथी मोहन, सोहन और श्याम ऐसे ही थे। राकेश को उनके अभिनय पर बिलकुल भी विश्वास नहीं था। वह स्वयं अभिनय इसलिए नहीं कर रहा था, क्योंकि फुटबाल खेलते हुए वह अचानक गिर पड़ा था। उसके हाथ में चोट लग गई थी और हाथ को एक पट्टी में लपेटकर गर्दन के सहारे लटकाए रखना पड़ता था।

नाटक खेलना बहुत आवश्यक था। मोहल्ले की इज़्ज़त का सवाल था। मोहल्ले के बच्चों ने मिल-जुलकर फालतू पड़े एक छोटे-से सार्वजनिक मैदान में **दूब** व फूल-पौधे लगाए थे। वहीं एक मंच भी बना लिया था। राकेश की योग्यता पर सबको बहुत विश्वास भी था।

समय था—केवल एक सप्ताह का। सात दिन ऐसे निकल गए कि पता भी नहीं लगा! मोहन, सोहन और श्याम यूँ तो अच्छी तरह अभिनय करने लगे थे, पर राकेश को उनके बुद्धूपन से डर था। हर एक अपने को दूसरे से अधिक

शब्दार्थ: दूब—घास

Scanned with CamScanner

1. प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में लिखिए

१.नाटक खेलने के लिए क्या आवश्यक है?--- पूरी तैयारीऔर अभ्यास |
२.राकेश के साथियों के नाम लिखिए?--- सोहन, मोहन और श्याम |----
३.नाटक कब नहीं खेलना चाहिए?---अधूरी तैयारी,अनुभवहीन कलाकारों, घबरा जाने वाले दोस्त तथा बुद्धू अभिनेता हों |
४.नाटक खेलना किस की इज्जत का सवाल था?------मौहल्ले-की |-------
५.नाटक खेले जाने में कितना समय बाकी था?----एक सप्ताह का समय था|
६.नाटक कहाँ खेले जाने वाला था?-------सार्वजनिक मैदान में | |
७.अर्थ लिखिए---दूब-घास, फालतू-अनुपयोगी, बुद्धूपन-बेवकूफी |

समझदार मानता था। इसलिए यह भूल जाता था कि वह कहाँ क्या कर रहा है—बस कहने से मतलब! दूसरे चाहे उनकी मूर्खतापूर्ण बातों पर हँस रहे हों, मगर वे पागलों की तरह आपस में ही उलझने लगते थे।

राकेश ने पूर्वाभ्यास के सात दिनों में उन्हें बहुत अच्छी तरह समझाया था। निर्देशन उसने इतना अच्छा दिया था कि छोटी-से-छोटी और साधारण-से-साधारण बात भी समझ में आ जाए।

खैर, **प्रदर्शन** का दिन और समय भी आ गया। राकेश साज-सज्जा कक्ष में खड़ा सबको खास-खास हिदायतें फिर से दे रहा था।

मोहन बोला, ''मेरा दिल तो बहुत ज़ोरों से धड़क रहा है।''

''मेरा भी,'' सोहन ने सीने पर हाथ रखकर कहा।

''तुम लोग पानी पियो और मन को साहसी बनाओ,'' राकेश ने फिर हिम्मत बढ़ाई।

जैसे-तैसे अभी तक तो ठीक-ठाक हो गया। अभिनेता मंच पर आ गए। पर्दा उठा।

मोहन बना था—चित्रकार और सोहन बना था—उर्दू का शायर। नाटक में दोनों दोस्त होते हैं। चित्रकार कहता है—उसकी कला महान, शायर कहता है—उसकी कला महान! श्याम बनता है—संगीतकार।

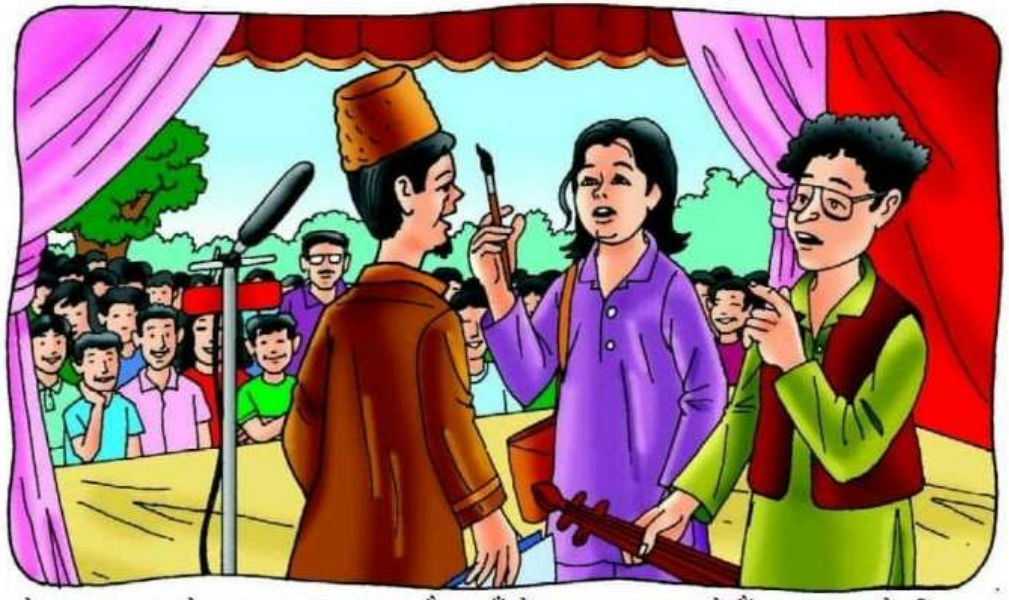

वह उनसे मुलाकात करने उस स्थान पर आता है, जहाँ वे यह बहस कर रहे हैं। बजाय इसके कि वह नए-नए मित्रों से मधुर बातें करे, बड़े-छोटे के इस विवाद में उलझ जाता है। वह कहता है—संगीतकार की कला महान!

अभी तक अभिनय अच्छी तरह चल रहा था। सबको अपना-अपना **'पार्ट'** याद आ रहा था। सब ठीक-ठीक अभिनय करते चले जा रहे थे। अचानक श्याम अपना पार्ट भूल गया।

शब्दार्थ: प्रदर्शन—दिखाना, नाटक को मंच पर करना; **पार्ट**—हिस्सा, भूमिका

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर, संक्षिप्त लिखिए—

१. वे क्यों भूल जाते थे कि वे कहाँ क्या कर रहे हैं ?—अपने को एक-दूसरे से अधिक समझदार मानते थे|

२.राकेश साज-सज्जा कक्ष में खड़ा होकर क्या दे रहा था?------ ख़ास-ख़ास हिदायतें|

३. 'नाटक-में नाटक' पाठ में मोहन क्या बना था?----चित्रकार |

४.सोहन और श्याम ने कौन-सा अभिनय निभाया?-------- सोहन बना - उर्दू का शायर,श्याम बना था संगीतकार

५. अचानक कौन अपना पाठ भूल गया? -- -श्याम - |

६.अर्थ लिखिए--पूर्वाभ्यास-पहले किया गया अभ्यास, अचानक-एकाएक , पार्ट-भूमिका | |

पर्दे की **आड़** में राकेश स्वयं पूरा लिखित नाटक लिए खड़ा था। वह हर नए संवाद का पहला शब्द बोल रहा था ताकि कलाकारों को संवाद याद आते रहें।

मगर श्याम घबरा गया। वह सहसा चुप हो गया। उसके चुप होने से चित्रकार और शायर महोदय भी चुप हो गए। होना यह चाहिए था कि वे दोनों कोई बात मन से ही बनाकर बात आगे बढ़ा देते, पर वे घबराकर राकेश की तरफ़ देखने लगे। संगीतकार महोदय भी पलटकर राकेश की ओर देखने लगे।

राकेश बार-बार संगीतकार जी का संवाद बोल रहा था मगर आवाज़ तेज़ होकर 'माइक' से सबको न सुनाई दे जाए, इसलिए धीरे-धीरे फुसफुसाकर बोल रहा था। संगीतकार जी को वह हल्की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

तभी शायर साहब संगीतकार के कंधे पर हाथ मारकर बोले, ''उधर जाकर सुन ले न।'' संगीतकार जी अपना वायलिन पकड़े-पकड़े राकेश की ओर खिसक आए!

दर्शक **ठठाकर हँस** पड़े। संगीतकार जी और घबरा गए। जो कुछ सुनाई पड़ा उसे ही बिना समझे-बूझे झट-से बोलने लगे।

संवाद था—''जब संगीत की स्वर-लहरी गूँजती है तो पशु-पक्षी तक मुग्ध हो जाते हैं, शायर साहब! आप क्या समझते हैं संगीत को?''

मगर संगीतकार साहब बोल गए यों—''जब संगीत की स्वर-लहरी गूँजती है तो पशु-पक्षी तक मुँह की खा जाते हैं, गाजर साहब! आप क्या समझते हैं हमें?''

शब्दार्थ: **आड़**—(पर्दे के) पीछे; **ठठाकर हँसना**—ज़ोर से हँसना

3.संक्षिप्त उत्तर लिखिए -

१.पर्दे की आड़ में राकेश क्या लिए खड़ा था?--- --------पूरा लिखित नाटक |

२.कलाकारों को कैसे अपना संवाद आता रहा ?--राकेश हर नए शब्द का संवाद बोल रहा था | -

३.श्याम क्यों घबरा गया था?---अपना पाठ भूल गया था | -

४.श्याम के चुप होने का अन्य अभिनेताओं पर क्या असर हुआ ?--—चित्रकार और शायर भी चुप हो गए|

५.संवाद कौन बता रहा था?-----राकेश | -

६.अर्थ लिखिए—आड़-पीछे, ठठाकर हँसना-ज़ोर से हँसना,मुग्ध-प्रसन्न

शायर साहब **तपाक** से बोले, ''तुम्हारा सर! गाजर साहब हूँ मैं?''

दर्शक फिर ठठाकर हँस पड़े।

चित्रकार महोदय ने मंच पर सूझ और अक्लमंदी दिखाने की कोशिश की–''इनका मतलब है आपकी शायरी गाजर-मूली है और आप गाजर साहब हैं! सो इनकी कला महान है। मगर मेरी कला इनसे भी महान है।''

राकेश दाँत पीस रहा था। उसकी सारी मेहनत पर पानी पड़ गया था। पर इस तरह बात सँभलते देखकर वह कुछ शांत हुआ।

इस बार शायर साहब बुद्धूपन दिखा बैठे।

गुस्सा होकर बोले, ''तूने भी गलत बोल दिया। मुझे गाजर साहब कहने की बात थी क्या? और मेरी शायरी गाजर-मूली है तो तेरी चित्रकला झाड़ू फेरना है, पोतना है, पालिश करना है, **झख मारना** है!''

चित्रकार महोदय ने हाथ उठाकर कहा, ''देख, मुँह सँभालकर बोल!''

दर्शक फिर ज़ोर से हँस पड़े।

राकेश घबरा रहा था। गुस्सा भी आ रहा था उसे और रोना भी। सारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल गई। पर अब क्या हो? वह बार-बार दोनों हथेलियों को मसल रहा था और कोई तरकीब सोच रहा था।

शब्दार्थ: **तपाक**–झट से; **झख मारना**–बेकार के कामों में समय व्यतीत करना

4. संक्षिप्त उत्तर लिखिए-- -

१.चित्रकार मंच पर क्या दिखाने की कोशिश कर रहे थे?— सूझ और - अक्लमंदी|

२. राकेश दांत क्यों पीस रहा था ?-----उसकी सारी मेहनत पर पानी - पड़ गया था|

३.राकेश को गुस्सा क्यों आ रहा था?---क्योंकि उसकी सारी इज्जत - मिट्टी में मिल गई थी|

४.राकेश क्या सोच रहा था?-----कोई नई तरकीब सोच रहा था | -

-

५.अर्थ लिखिए-तपाक-झट से,तरकीब-उपाय,सूझ-दृष्टि,अक्लमंदी -- - समझदारी |

इधर मंच पर तीनों में जोरों से तू-तू मैं-मैं हो रही थी। चित्रकार महोदय हाथ में कूँची पकड़े, आँखें नचा-नचाकर, मटक-मटककर बोल रहे थे–

''अरे चमगादड़ तुझे क्या खाक शायरी करना आता है! जबरदस्ती ही तुझे यह पार्ट दे दिया। तूने सारा गड़बड़ कर दिया।''

''मुझे चमगादड़ कहता है? अबे **करामकल्ले**, आलूबुखारे, शायरी तो मेरी बातों से टपकती है। तूने कभी 'टूथ-ब्रुश' के अलावा भी कोई ब्रुश उठाया है? यहाँ चित्रकार बना दिया तो सचमुच ही अपने को चित्रकार समझ बैठा।''

दर्शक हँसी से लोट-पोट हुए जा रहे थे। संगीतकार महोदय कभी उन दोनों लड़ते हुओं की ओर हाथ नचाते, कभी दर्शकों की ओर।

तभी तेजी से राकेश मंच पर पहुँच गया। सब चुप हो गए, **सकपका** गए। राकेश एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला–''आज मुझे अस्पताल में हाथ पर पट्टी बँधवाने में देर हो गई तो तुमने इस तरह 'रिहर्सल' की है! जोर-जोर से लड़ने लगे। अभिनय का दिन बिलकुल पास आ गया है और हमारी तैयारी का यह हाल है।''

चित्रकार महोदय ने इस समय अक्लमंदी दिखाई। बोले, ''हम क्या करें डायरेक्टर साहब? पहले इसी ने गलती की।''

शब्दार्थ: करामकल्ले–पीठ पीछे; सकपका जाना–घबरा जाना

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त,लिखिए -

१.चित्रकार हाथ में क्या पकडा हुआ था ?-----कूंची -

-

२.किसे मंच पर आते देखकर तीनों सकपका गए?--- राकेश को -

३.राकेश ने कौन सी बात संभाल ली थी?----- बिगड़ते जा रहे नाटक की बात संभाल ली |

४.दर्शक क्या समझ रहे थे?---नाटक बिगड़ चुका है,मगर यहाँ तो - नाटक में ही नाटक था|

५.नाटक में क्या दिखाया गया?---नाटक की तैयारी की कठिनाइयों - और कमजोरियों को|

६.नाटक का नाम 'बड़ा कलाकार' क्यों रखा गया?---बड़ा कलाकार--- वह है जो दूसरे की त्रुटियों को देखे और सुधारे|

पाठ में से ....

1. राकेश ने नाटक में स्वयं अभिनय नहीं किया क्योंकि फुटबॉल खेलते समय वह गिर पड़ा था और उसके हाथ में गहरी चोट आई थी जिसके कारण उसे हाथ को एक पट्टी में लपेटकर गर्दन के सहारे लटकाए रखना पड़ता था।

2. राकेश के साथी अभिनय के मामले में बिलकुल नौसिखिया थे। मंच पर जाते ही वे घबरा जाते थे और घबराहट के कारण अपना संवाद भूल जाया करते थे।

3. राकेश ने प्रदर्शन के दिन अपने सभी मित्रों को खास-खास हिदायतें फिर से दीं ताकि नाटक मंचन बिना किसी त्रुटि के हो जाए और मोहल्ले में उनके नाटक की प्रशंसा हो।

4. राकेश पर्दे के पीछे से सारा नाटक देख रहा था पर जब उसके मित्रों ने अपने-अपने संवाद न कहकर बहस करने लग गए और उनके संवादों को सुनकर दर्शकगण उनकी मूर्खता पर हँसने लगे तो बिगड़ते नाटक को सँभालने के लिए राकेश खुद मंच पर उपस्थित हो गया और कुर्सी पर बैठकर बोला- "आज मुझे अस्पताल में हाथ में पट्टी बँधवाने में देर क्या हो गई तुमने इस तरह 'रिहर्सल' की है! और आपस में ही लड़ने लगे।" यह कथन सुनकर मित्रों को थोड़ी समझ आई और उन्होंने राकेश की हाँ में हाँ मिलाकर बिगड़ते नाटक को बचा लिया।

5. इस कहानी के लिए 'राकेश की समझदारी' शीर्षक रखना ज्यादा उचित होगा क्योंकि पूरी कहानी में राकेश ही सबसे समझदार पात्र है और उसने अपनी सूझ-बूझ से बिगड़ते नाटक को सँभाल लिया।

6.क. मोहन ने — राकेश से कहा
ख. राकेश ने — अपने मित्रों से कहा
ग. श्याम ने — कहा सोहन से

7.क. सही
ख. सही
ग. नहीं
घ. सही
ङ. नहीं
च. नहीं
छ. नहीं
ज. सही
झ. नहीं
ञ. सही

बातचीत के लिए

1. राकेश को अपने साथियों के मंच पर आते ही घबराहट में अपना संवाद भूल जाना और बहस कर बैठने के बुद्धूपन से डर था।

2. हाँ, मैंने नाटक में हिस्सा लिया है जिसमें मैं स्त्री की भूमिका अदा कर रहा था पर बार-बार अपने संवादों में पुल्लिंग क्रियाओं का प्रयोग कर रहा था जिस वजह से दर्शक बहुत हँस रहे थे।

अनुमान और कल्पना

1. अगर श्याम अपना संवाद नहीं भूलता तो नाटक के सामान्य रूप से आगे बढ़ने की संभावना बनी रहती और न ही शायर, चित्रकार और संगीतकार में किसी भी प्रकार की बहस होती और न ही दर्शक उनके उल-जलूल संवादों पर हँसते।

2. राकेश की जगह अगर मैं होता तो नाटक के बिगड़ने की स्थिति पैदा ही नहीं होने देता। अपने मित्रों के बुद्धूपन को जान लेने के बाद उनके संवादों को मैं पहले से रिकॉर्ड करा लेता और मंच पर केवल उन्हें अभिनय के साथ मुँह हिलाना होता न कि सच में संवाद बोलने होते।

भाषा की बात

1. त्रुटि
2. पट्टी
3. पर्दा
4. पूर्वाभ्यास
5. प्रशंसा
6. मंच
7. संवाद
8. सप्ताह
9. सार्वजनिक
10. स्वयं

2.

क. स्वर - लहरी	साज - सज्जा
ख. फूल - पौधे	लोट - पोट
ग. जैसे - तैसे	पशु - पक्षी

3.क. मूर्खतापूर्ण	मूर्ख	पूर्ण	
ख. साधारण	धार	धारण	रण
ग. संगीतकार	संगीत	गीत	कार
घ. बनाकर	बना	नाक	कर
ङ. कलाकार	कल	कला	कार

जीवन मूल्य

1. हम रोकर, घबराकर या गुस्से में किसी मुश्किल परिस्थिति का सामना नहीं कर सकते हैं क्योंकि ये सारे कमज़ोर मनुष्य की निशानियाँ होने के साथ-साथ खोखले व्यक्तित्व की पहचान भी है।

2. गुस्से या क्रोध को शांत करने के लिए हमें अपने आप से सवाल करना चाहिए कि क्या क्रोध से मेरा कुछ भी लाभ हो रहा है? उत्तर यही मिलेगा कि नहीं। इसके अलावा गुस्से या क्रोध को शांत करने के लिए हमें शांतचित्त से एकांत में बैठ जाना चाहिए।

कुछ करने के लिए

1.

	त्योहार का नाम	महीने का नाम
क.	होली	फागुन
ख.	दीवाली	कार्तिक
ग.	सरस्वती पूजा	माघ
घ.	दुर्गा पूजा	आश्विन
ङ.	मकर संक्रांति	पौष/माघ
च.	रामनवमी	चैत

2. बारिश आई छम छम छम
लेकर छाता निकले हम
पैर फैसला गिर गए हम
नीचे छाता ऊपर हम